P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र में नायिका एक अध्ययन

माधवी शर्मा
प्राचार्या
डी. बी. महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान, भारत

संजय मेहरा
शोधार्थी,
डी. बी. महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश

नायिका नाट्य की प्राण–वाहिनी धारा है, जिसमें जीवन का मर्मस्पर्शी मधुर रस लहराता रहता है। इस जीवन रस के पान के लिए ही नायक प्राण तक विसर्जन करने को प्रस्तुत रहता है। कवि अपनी काव्य–कला के चरम सौन्दर्य की कोमल सुकुमार सृष्टि करता है। प्रयोक्ता अपनी नाट्य–कला के परम उत्कर्ष को रूपायित करता है। नाट्याचार्य भरतमुनि ने नारी को सुख का मूल काम भाव का आलंबन और काम को सब भावों का स्त्रोत मानकर प्रस्तुत विषय का विचार जितने विस्तार से किया है। उतनी ही सुक्ष्मता से भी नारी सुख की मूल, त्रिभुवन का आधार और त्रैश्लोकय रूपा के रूप में प्रंषसित रही है। इसी संदर्भ में भरत द्वारा नारी की भूमिका को नितान्त उचित बताया है।

नाट्याचार्य भरतमुनि ने नारी को सुख का मूल काम भाव का आलंबन और काम को सब भावों का स्त्रोत मानकर प्रस्तुत विषय का विचार जितने विस्तार से किया है। उतनी ही सुक्ष्मता से भी, नारी सुख की मूल, त्रिभुवन का आधार और त्रैश्लोकय रूपा के रूप में प्रशंसित रही है। इसी संदर्भ में भरत द्वारा नारी की भूमिका को नितान्त उचित बताया है।

मुख्य शब्द : मर्मस्पर्शी, प्रशंसित, स्मितभाषिणी, उदात्त्ता, निमृता, रूपायितं।

प्रस्तावना

नायिका उस व्यक्ति को कहते है जो किसी नाटक या अन्य कला की प्रस्तुति में अपने किरदार को निभाएँ। नायिका ऐसा कार्य करने वाली स्त्री शख्स को कहते है। भरत ने नारी को सुख का मूल कहकर नाट्य में उसकी प्राणवाहिनी धारा का ऐसा संकेत दिया है जोकि जीवन को मधुररस से भरता है, नाट्य में स्त्री पात्रों के योजनाक्रम के बारे में भरत ने विस्तार से इनका विवरण दिया है जिससे इनके महत्व की पुष्टि होती है, जो सर्वथा उचित भी है।

भरत ने नाट्यशास्त्र में मानव प्रकारों की मुख्य विशेषताओं का आकलन कर उनका वर्गीकरण किया तथा उनकी प्रधान विशेषताओं को पृथक करते हुए उनके स्वरूप को प्रस्तुत किया, गुणों के आधार पर उनकी विशिष्टताओं के अलावा उनके पूर्व के जीवन को प्रकृति का आधार मानकर भरत ने नारी को तीन प्रभेदों में विभक्त किया हैं।

नारीभेद

प्रकृति के आधार पर स्त्री को भरत ने तीन प्रकार में विभक्त किया है : स्त्रियों के बारे में हम निम्नानुसार कह सकते हैः–

उत्तम

स्त्रियों में जो कोमल हृदय, स्मितभाषिणी, गुणलोभिनी, सलज्ज, विनयशील, माधुर्य रूप से मंडित गंभीर स्वभाववाली हो, वह 'उत्तम' प्रकृतिवाली नारी होती है, अप्रिय प्रसंगों में अप्रिय बात न करनेवाली, यदि किसी कारणवश गुस्सा हुई हो तब भी शीघ्र शांत होनेवाली, दोष गोपन (दोषों को गोपनीय रखनेवाली), कुलीन, धनवानों को पसंद आनेवाली, कामशास्त्र में कुशल, चतुर, रूपवान, समयसूचक तथा दक्ष नारी यानी उत्तम नारी।

मध्यम

उत्तम प्रकृति की नारी से किंचित न्यून गुणोंवाली नारी 'मध्यम' प्रकृति की होगी, जिसमें पादोश दर्शकी की अल्प मात्रा में प्रवृत्ति रहती है, श्लोक व्यवहार में दक्ष, शिल्प तथा शास्त्र में अभिज्ञता रखनेवाली, विज्ञान तथा माधुर्य गुणों से संपन्न, पुरूष की कामना करने वाली, साथ ही पुरूष को भी जिसकी कामना है, ऐसी कामोपचार में कुशल, अन्य सुंदर स्त्रियों का द्वेष न करनेवाली, ईर्ष्या से भरपूर, गर्वोन्मत्त, जल्दी गुस्सा करनेवाली तथा शीघ्र प्रसन्न होनेवाली नारी यानी 'मध्यम' प्रकृतिवाली नारी होती है।

अधम

रूक्ष भाषण, दुःशीलता, पिशुनता, मित्रदोह, अकृतज्ञता, आलस्य, कलप्रियता तथा क्रोध भाव से भरी हुई प्रकृति 'अधम' होती है तथा विनावजह

गुस्सा करनेवाली, अतिमानी, अंहकारी, कठोर, प्रतिकूल, दीर्घरोषा (देर तक गुस्सा रखनेवाली) नारी 'अधमा' मानी जाती है।

भरत ने शील के आधार पर जिस तरह स्त्री और पुरूष की तीन श्रेणियां मानी है, नाट्य में भी उसने ऐसा ही विभाजन किया है, जिनकी प्रकृति स्पष्ट नहीं होती, उन्हें उसने संकीर्ण पात्रों की श्रेणी में रखा है, आचार्य अभिनवगुप्त के मंतव्य से कभी अधम पात्रों या उत्तम या मध्यम पात्र भी संकीर्ण प्रकृति के होते है, पुरूषों में नंपुसक होते है वैसे स्त्रियों में प्रेष्या अधम होते है।

'नारीभेद' के इन प्रकारों के साथ ही भरत ने 'नायिकाभेद' का भी विस्तृत वर्णन किया है, क्योंकि नारीभेद के आधार पर ही 'रंगमंच' पर नायिकाओं को प्रस्तुत किया जाता है।

नायिका के प्रकार

नायिका के चार प्रकार भरत निम्नानुसार कहता है–

''एते नु नायका ज्ञेया काव्यबंधेषु सर्वदा।
नायिकाष्चैव वक्ष्यामि चतस्त्रः पुनरेव तु।।[1]

नायक की आभ्यन्तर प्रकृति के अंतर्गत सर्वप्रथम मुख्यरूप में 'नायिका' ही आती है जिसकी सामाजिक प्रतिष्ठा, आचरण की पवित्रता, वयोवैशिष्ट, अंगसौंदर्य, प्रकृति, कामभाव की स्थिति आदि के आधार पर स्वरूप विवेचित होता है, भरत ने भी इन आधारों को ग्रहण कर इनके स्थूल और सूक्ष्म तत्वों का समन्वय करते हुए बड़ा ही सुचिंतित विवरण दिया है, इनमें प्रकृतिभेद से उनके उत्तम, मध्यम तथा अधम आचरण के आधार पर ब्राह्य, आभ्यन्तरा, वर्ग में लेकर यहां उनके विषय में सामाजिक स्थिति को अधिमान्यता देकर नायिका के चार प्रभेद दिखलायें।

''दिव्याच नृपपत्नी च कुलस्त्री गणिका तथा।
एतास्तु नायिका सेया नानाप्रकृति लक्षणाः।।
धीराच ललिता चैव उदात्ता निभृता तथा।
दिव्या राजाङ्गनाश्रवैव भवन्ति हि।।
उदात्ता निभृता चैव भवेत्तु कुलजाङ्गना।
ललिता चाप्युदात्ता च गणिका शिल्पकारिका।[2]

दिव्या या देवी

धीरा, ललित, उदात्त और मर्यादाधीन और पतिनिष्ठ स्त्रियां इस श्रेणी में आती है, किसी भी विपदा को जो धीरता से मुकाबला करती है, या फिर धीरज रखती है, ललित कलाओं में रूचि तथा सौंदर्यता में अव्वल, उदात्त सोच विचार तथा मर्यादाओं के अधीन रहकर पतिनिष्ठ और पति को समर्पित स्त्री यानी दिव्या, सती, उर्वशी, आदि इसी श्रेणी में आती है।

नृपपत्नी या महारानी

सामाजिक स्थिति की अधिमान्यता में नृपपत्नी दूसरी श्रेणी में आती है, राजाओं की रानियां या पत्नियां, इस श्रेणी के तहत् देखी जाती है, दिव्या के गुण और लक्षण महारानी में भी होते है।

कुलस्त्री या कुलांगना

कुलांगना या कुलस्त्री उदात्ता और निभृता (मर्यादा के तहत् और एकनिष्ठ) होती है, चारूदत्त की धूता इसी श्रेणी में आती है।

गणिका

इनमें वेश्या या शिल्पिनी आती है, जो ललिता और उदात्ता होती है, वसंतसेना जैसी गणिका, शिल्पाशास्त्रज्ञ तथा उदात्त और रसज्ञ होती है।

नायिकाओं के शीलगत भेद

नायिकाओं के शीलगत भेद भी किये गये है, जिनमें धीरा, उदात्ता, ललिता और निभृता होती है, 'काम की दशाओं' को लेकर 'नाट्यशास्त्र' ने नायिकाओं के आठ प्रभेद बताये हैं।

''तत्र वासकसज्जा च विरहोत्काण्ठितापि वा
स्वाधीनभर्तृका चापि कलहान्तरितापि वा।
खण्डिता विप्रलब्धता वा तथा प्रोषितभर्तृका।
तथाभि सारिका चैव ज्ञेया स्त्वष्टौ तु नायिकाः।।[4]

वासकसज्जा

जो स्त्री काम के लिए आतुर होकर योग्य वस्त्राभूषणों को प्रसन्न होकर धारण करती हो तथा स्वयं को संजाकर, संवरकर प्रियतम का इंतजार करती हो, तो उसे 'वासकसज्जा' नायिका समझना चाहिए।

विरहोत्कण्ठिता

जिसका स्वामी या प्रिय अनेक कार्यों में व्यस्त रहने से समय पर लौट न पाए और इसी वजह से जो नायिका दुःखी हो जाए वह विरहोत्कण्ठिता' कहलाती है।

स्वाधीनभर्तृका

रति (और व्यवहार) से अति आकृष्ट होकर जिसके पास प्रिय सदा बन रहे, उस अत्यंत हर्ष, सौभाग्य और अभिमान शालिनी नायिका को 'स्वाधीनभर्तृका' समझना चाहिए।

कलहान्तरिता

ईर्ष्या और कलह के कारण थककर और परेशान होकर जिसका प्रेमी दूर चला जाएं और उसके न आने के कारण जो नायिका क्रोध सें संतप्त हो जाती है उसे 'कलहान्तरिता' समझना चाहिए।

खण्डिता

जिसका पति या प्रेमी अन्य स्त्री पर आसक्त होने के कारण समय पर लौटता नही तब उसकी बाट जोहती हुई दुःखी नायिका 'खण्डिता' कहलाती है।

विप्रलब्धा

जिस प्रिय के पास दूरी के जरिये संदेष भेज कर संकेत स्थल पर बुलाया जाता है लेकिन किसी कारणवश प्रिय वहां पंहुच न पाये तो उसी वजह से अपमानित होने वाली नायिका 'विप्रलब्धा' कहलाती है।

प्रोषितभतृका

जिसका पति या प्रिय, महत्वपूर्ण कार्य की वजह से परदेश चला गया हो और परिणामस्वरूप बिना केश संस्कार के शिथिल वेणी में रहनेवाली नाटिका को 'प्रोषितभतृका' समझना चाहिए।

अभिसारिका

मद या मदन के आवेगवश जो लज्जा का परित्याग कर प्रिय से मिलने के लिए संकेत स्थान पर अभिसरण करे उसे 'अभिसारिका' नायिका समझना चाहिए।

नारीभेद : अंगरचना और अंतःप्रवृत्ति पर आधारित

'नाट्यशास्त्र' के अनुसार इस संसार में सभी मनुष्य अधिक सुख के आकांक्षी है और सुख का मूल स्त्रियां होती है, जिनकी अंगरचना और अंत प्रवृत्ति पर आधारित भेद निम्नानुसार हैः–

देवशीला

सुकुमार अवयव, नेत्रों से स्थिर एवं मंद भाव से जो अवश्लोकन करती हो, स्वस्थ और दीप्तिसंपन्न हो, दान, शक्ति तथा विनय से युक्त हो, जिसके शरीर से पसीना कम निकलता हो, प्रत्येक अवस्था में समान भाव से स्नेह रखती हो, अल्प आहार लेती हो, जिसे सुगंधित वस्तुएं प्रिय हो, गायन व वाद्य में जो रूचि रखनेवाली तथा सूरत की अभिलाषी हो, उसे 'देवांगना' समझनी चाहिए।

असुरशीला

अधर्म व षठवृत्ति में लीन, देर तक क्रोधी रहनेवाली, कठोर, स्वभाववाली, मद्य और मांस की प्रेमी, सदा क्रोधायमान, अभिमान, करनेवाली, चंचलवृत्ति, लोभी, कटुभाषिणी, लड़ाकू, ईर्ष्या रखनेवाली तथा बहुत कम स्नेह रखनेवाली नारी 'असुरशीला' समझनी चाहिए।

गांधर्वशीला

उपवन विहारक, नाखून, दात सुंदर और खिले हुए हो, मंदहासपूर्वक संभाषण करने वाली, तन्वी, मंद गति से चलनेवाली, रति में प्रीति रखनेवाली, सदा गीत, वाद्य और नृत्य में मग्न रहनेवाली, साफसुथरा तन, कोमल स्वभाव व सुंदर केषों और नेत्रोंवाली नारी यानी गांधर्वशीला।

नागशीला

तीखी नाक, तीक्ष्ण दांत, सुंदर लोचदार शरीर, लाल आंखे, नील कमल और शरीर, निद्रालु, क्रोधी, तिरछी गति और अस्थिर कार्य तथा अस्थिर कार्य तथा सखियों के बीच खुश रहनेवाली, मानिनी स्त्री जो सुंगधित पुष्प, चंदन तथा आसव का सेवन करती हो वह 'नागशीला' कहलाती है।

पक्षी शीला

चौड़ा मुंह, तीक्ष्ण स्वभाव, जलविहार में प्रीति, सुरा, आसव तथा क्षीर का सेवन करनेवाली, अनेक संतानोंवाली, फलों को पसंद करनेवाली और उपवन, वनविहार में प्रीति रखनेवाली, अति चंचलवृत्ति तथा ज्यादा बात करनेवाली नारी 'पक्षीशीला' होती है।

पिशाचशीला

हाथों में कम या ज्यादा उंगलियोंवाली, घर के उद्यानों में रात्रि में भी निर्भयता से विचरण करनेवाली, बच्चों को डरानेवाली, चुगलखोर, कटुभाषिणी, मर्यादाओं का पालन न करनेवाली, अधिक बालवाली, जोर से बोलनेवाली, तथा मदिरा और मांस से प्रेम रखनेवाली नारी 'पिशाचशीला' कहलाती है।

यक्षशीला

नींद में शरीर से पसीना निकलता हो, आसन या पलंग पर ही बैठना जिसे भाता हो, जिसका शरीर कोमल और बुद्धिमान हो, जिसके शरीर से मस्त मद्य सी खुशबू आती हो, जिसे मांस सेवन पंसद हो तथा बहुत दिनों के बाद किसी से मिलने पर कृतज्ञता से स्वागत करनेवाली, कम सोनेवाली नारी को 'यक्षशीला' कहलाती है।

व्याल (वयाघ्र) शीला

मानापमान के प्रति समान भाव, त्वचा और स्वर कठोर हो, दुष्ट स्वभाव, झूठी बातें बताने वाली, और मंजरी (पीली) आंखों वाली नारी 'व्यालशीला' कहलाती है।

मनुष्यशीला

विनीत स्वभाव, चतुर, गुणवान, सुभग, नारी जो अपने गुरूजन, तथा देवताओं की पूजा, भक्ति में व्यस्त रहती हो, कर्तव्य और प्रयोजन की पूर्ति में सजग हो, गर्वविहीत और स्वजनों से स्नेह रखनेवाली सत्वरित्रा नारी को 'मानवशीला' कहलाया जाता है।

वानरशीला

ठिगना कद, भरा हुआ शरीर, धृष्ट स्वभाव, पीले बाल, फलों का नित्य सेवन करती नारी जो वाचाल, चपल, फुर्तीली होने के साथ जिसे वन, उपवन, वृक्षविहार करना भाता हो, जो थोड़े से उपकार को बड़ा मानती है तथा तीव्र रति आकांक्षा रखती हो, उसे 'वानरशीला' कहा जाता है।

हस्तीशीला

फैला हुआ ललाट और ठुड्डी, भारी और मांसल शरीर, पीली आंखे, शरीर पर ज्यादा बाल हो, जिसे सुगन्धमय वस्तु, पुष्प आसव और वनविहार भाता हो, क्रोधी लेकिन मंद और शांत स्वभाववाली, वनविहार, मधुर पदार्थों तथा रति–क्रीड़ा में रूचि रखनेवाली नारी 'हस्तीशीला' कहलाती है।

मृगशीला

छोटा पेट, बैठी हुई नाक, पतली जंघांए, लाल और बड़ी–बड़ी आंखोवाली, वन में घूमने की शौकीन, शीघ्र चलनेवाली, डरपोक लेकिन गीत सुनने की इच्छुक, छोटी बातों से क्रोधित हो जानेवाली, कार्यों को स्थिरता से न करनेवाली नारी 'मृगशीला' कहलाती है।

मीनशीला

लंबा, मोटा, उंचा सीना रखनेवाली, चंचल आंखे और न गिरनेवाली पलकें, अनेक सेवकों और संतानों वाली तथा जिसे जल प्रिय हो, ऐसी नारी को 'मीनशीला' कहलाती है।

उष्ट्रसत्वा

लम्बे होंठ, शरीर से निरंतर बहता पसीना, भौंडी चाल, पिचका पेट हो तथा जिसे पुष्प, पल, नमकीन, खारी, मीठी वस्तुएं प्रिय हो, जिसकी कमर और कोख कसी हुई हो, स्वर कर्कश और शब्द तीखे हो कमर और गला ऊँचा रहता हो, उसे 'राष्ट्रसत्वा' नारी समझते हैं।

मकरशीला

क्रूर स्वभाव वाली, बड़े मस्तिष्क, और सीधी गर्दनवाल, चौड़ा और खुला मुंह, मोटी आवाज और कमोबेश 'मीनसत्वा' के समान गुणवाली नारी को 'मकरशीला' समझना चाहिए।

खरशीला

मोटे होंठ, दांत और जबानवाली, कड़ा शरीर और तीखे भाषणवाली, रतिक्रीड़ा में कलह करनेवाली नखक्षत, दंतक्षत देने में प्रवीण, सैतानों से डाह करने वाली, गृहकार्य में चतुर, शीघ्रता से चलने वाली, क्रोध से भरी रहने वाली तथा अनेक संतानों वाली नारी को 'खरसत्वा' समझना चाहिए।

सूकरशीला

लंबा पेट, पीठ और मुंह, मजबूत शरीर और उस पर बाल, संकरा ललाट, प्रिय भोजन कंदमूल और फल हो, दांत काले और मुंह भद्दा हो, बाल और पिंडलियां मोटी हो, जिसकी वृत्ति ओछी और अनेक संताने हो, उसे 'सूकरशीला' नारी समझना चाहिए।

हयसत्वा

स्थिर स्वभाववाली, सुतवा कोख, पिंडली, कमर, पीठ और गर्दन हो, सुंदर, दानी, धर्मावलंबी, सीधे और मोटे बालों वाली, दुबली पतली, चंचल, चितवन, मधुरभाषिणी, तेज चलनेवाली, काम सेवन में रूचि लेने वाली तथा क्रोध करने वाली नारी को 'हयसत्वा' समझना चाहिए।

महिषशीला

मोटी पीठ, हड्डियां और दांत, पतला पेट और कोख, कड़े और भद्दे बाल, रौद्र स्वरूपवाली, मनुष्य से द्वेश करनेवाली, सदा रतिसुख की चाहत रखनेवाली, मुंह ऊँचा रखनेवाली, जलक्रीड़ा व वनविहार में रूचि रखनेवाली, बड़े ललाट और नितंबवाली नारी ' महिषशीला' कहलाती है।

अजाशीला

दुबली–पतली, छोटी बाहें और उरोज, दृष्टि स्थिर और लाल, हाथ पैर, घुंघराले बाल हो, जो डरपोक, मूर्ख, पागल हो, जिसकी अनेक संताने हों, जो वन में घूमने की इच्छा रखती हो, चंचल स्वभाव व तेज चाल वाली हो, उसे 'अजा–शीला' नारी समझना चाहिए।

अश्वशीला

तना हुआ शरीर और नेत्र, बार बार जम्हाई लेनेवाली, मितभाषिणी, लंबा और पतला मुख, छोटे हाथ पैर, कर्कश आवाज और कम नींद हो, क्रोधी स्वभाव हो, छिछला व्यवहार और उपकार को मानने वाली नारी 'अष्वशीला' है।

गोशीला

मोटे और ऊँचे नितंब, पतली जंघाएं और हाथ, पैर, सखियों में प्यारी, किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने में स्थिरवृत्ति रखनेवाली, संतति से स्नेह, पितरों तथा देवताओं की पूजा में प्रीति रखनेवाली, गुरूजनों का मान रखने वाली और क्लेश सहन करने का सामर्थ्य रखने वाली नारी को 'गोशीला' नारी कुल मिलाकर नारियों के उपरोल्लिखित विभिन्न प्रकार प्रकृति और प्रवृत्ति की भिन्नता के अनुरूप होते हैं, ये सभी नारियां देव, असुर, गंधर्व, राक्षस, नाग, पक्षी, पिशाच, यक्ष, व्याघ्र, मनुष्य, वानर, हाथी, मृग, मीन, खर, सूकर, अष्व, भैंस, बकरी तथा गौ के शील के समान शीलवाली होती है तथा उन्हीं के अनुसार विशेषताएं रखती है।

भरत ने साधारणी नायिका की चर्चा की है क्योंकि कई रूपक, प्रभेदों में नायिका रखी जाती है, साधारणी के अनुरक्ता तथा विरक्ता ये दो भेद नाट्यशास्त्र में मिलते हैं, आचरण की दृष्टि से आभ्यन्तर नायिका के अतिरिक्त बाह्या तथा बाह्याभ्यन्तरा भेद भी मुनि ने दिखलाये, जिनमें बाह्य साधारणी या वेश्या होती है तथा बह्याभ्यन्तरा वेश्या होकर कृतीशौचा नारी होती है।

आभ्यंतरा नारी भेद

राजोपचार में प्रयुक्त नारियों का भी भरत ने विवेचन किया है, जहां नायिका के अतिरिक्त अन्य नारीपात्र भी है, जिनकी मर्यादा स्वाभावादि भिन्न–भिन्न है, जिनमें महादेवी, स्वामिनी आदि आती है, इनके अतिरिक्त मध्यम तथा निम्न श्रेणी की नारियां भी है जो अंतःपुर के जीवन में सौंदर्य वातावरण का निर्माण करती है, भोगिनी, शिल्पकारिका, प्रतीहारी, कुमारी आदि ऐसे नारीपात्र है, ये मध्यम और निम्न श्रेणी की नारियां ही आभ्यन्तरा नारी होती हैं।

''महादेवी तथा देवी स्वामिनी स्थायिनी यथा।
भोगिनी शिल्पकारिणी नाटकीयाऽथ नर्तकी।।
अनुचारिका च विज्ञेया तथा च परिचारिकाः।
तथा संञ्चारिकाश्चैव यथा प्रेषणचारिकाः।।
महत्तरा प्रतीहारी कुतारी स्थविरा अपि।
आयुक्तिका च नृपतेरयमाभ्यन्तरों जनः।।[4]

ये है– महादेवी, देवी स्वाभिनी, स्थायिनी, (स्थापिता या रक्षिता) भोगिनी, शिल्पारिणी, नाटकीया, नर्तकी, अनुचारिका, परिचारिका, संचारिका, प्रेषणचारिका, महतरा, प्रतीहारी, कुमारी, वृद्धा, तथा आयुक्तिका, राजा के अंतःपुर में विद्यमान यहीं परिवार है (जिसे आभ्यन्तर – प्रकृति कहा जाता है)

महादेवी

इनमें जो सभी रानियों में प्रधान पट्टमहिषी हो, उच्च कुल में उत्पन्न तथा शील, गुण आदि से युक्त हो, दूसरी रानियों से अवस्था में बड़ी हो, दूसरी रानियों के झगड़ों में पड़नेवाली या उनका विवाद निपटा देनेवाली, क्रोध न करनेवाली, ईर्ष्याविहीन, राजा के स्वभाव की विज्ञाता, सुख और दुःख में समभाव से भाग लेने वाली पति के कल्याण और संतोष की सदा इच्छुक, शांत वृत्तिवाली, प्रीतिसंपन्न, धीर स्वभाववाली तथा रनिवास की भलाई में लगी रहने वाली जो रानी होती है, उसे 'महादेवी' (पट्टमहिषी) समझना चाहिए।

देवी

जो महादेवी में विद्यमान गुणों से युक्त होने पर भी उपयुक्त संस्कारों में कुछ पिछड़ी हुई हो, अपने सौभाग्य आदि पर गर्व करनेवाली, राजकुल में जन्म लेनेवाली, प्रीति और संमेलन की भावना में लीन रहनेवाली, अपनी सौतनों से डाह करनेवाली और अपने यौवन उन्माद में डूबी हुई हो, उसे 'देवी ' समझना चाहिए।

स्वामिनी

जिन सेनापति, अमात्य या अन्य राजसेवियों की पत्नियों का अंतःपुर में प्रेम और सम्मानपूर्वक पोषण किया

जाए और बाद में अपने शील, सौंदर्य और गुणों से जो महाराज का प्रेम प्राप्त कर पत्नी रूप में अधिष्ठित हो जाएं तो वे 'स्वामिनी' कहलाती है।

स्थायिनी

जो अपने सौंदर्य और यौवन का आकर्षण रखती हो, झगडालू या सखीविलास चेष्टाओं में प्रवीण, प्रीति विनोद की विशेषज्ञा, सौत से डाह करनेवाली, सदा सावधान रहने और कार्य करने में तत्पर, आलस्य और क्रूरता से विहीन, पद एवं स्थिति के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान का पूरा ध्यान रखनेवाली राजपत्नी हो तो उसे 'स्थायिनी' कहा जाता है।

भोगिनी

जो राजा के चित्त का अनुसरण करने में चतुर हो, सदा आज्ञाकारिणी (दक्षा), व्यवहार में साफ, उदात्त स्वभाववाली, सुंगधित पदार्थ और पुष्पमाला को सदा धारण किये हुए, डाह, राग, द्वेश–विहीन, सभी से अच्छा व्यवहार करने वाली, तटस्थ, गंभीर, शांत और विनम्र स्वभाव वाल हो, ऐसी राजा की प्रिया 'भोगिनी' कहलाती है।

षिल्पकारिका

जो स्त्री अनेक कलओं की ज्ञाता हो, अनेक षिल्प कार्यों में चतुर हो, सुगंधित वस्तुओं के अनेक प्रकारों का निर्माण करना जानती हो, चित्रों के निर्माण की अनेक विधाओं से परिचित हो, शय्या, आसन और वाहन का पूर्ण ज्ञान रखती हो, मधुरभाषिणी, चतुर, ईमानदार, स्पष्टभाषिणी, स्पष्ट व्यवहार रखने वाली, सभ्य व अपने भाव को प्रकट न करने वाली, वह 'शिल्पकारिका' होती है।

नाटकीया या अभिनेत्री

जो शरीर सौंदर्य एवं आकर्षण से पूर्ण हो, उत्तम गुणों अर्थात् औदार्य, सौभाग्य, धैर्य, शीघ्र आदि से युक्त हो, जिसकी आवाज कोमल, मधुर औरसुरीली हो, जिसके गले से निकलने वाा स्वर विचित्र या अचरजकारी हो, जो हेला तथा भावों के अभिनय प्रस्तुत करने में सक्षम हो, मृदु व्यवहार करने वाल, वाद्यवादन में कुशल, स्वर, ताल और यति का ठीक से ज्ञान रखने वाली, संगीत तथा नाट्य के आचार्य की शुश्रुषा करने वाली, चतुर, नाट्यप्रयोग में कुशल, अच्छे और बुरे का ठीक तरह से विचार करने वाली तथा रूप यौवन षालिनी स्त्री हो तो यह अभिनेत्री या नाट्कीया कहलाती है।

नर्तकी

जिसके अंग–प्रत्यंग अतिशय सुन्दर हो, जो चौसठ कलाओं में निपुण हो, चतुर व विनीत व्यवहार करनेवाली, स्त्री रोगों से रहित, सदा प्रगल्भ, आलस्यहीन, थकावट व माननेवाली या परिश्रमी, अनेक शिल्प कलाओं के प्रयोग के विज्ञाता, नृत और गीत में चतुर, (अपने) सामने मौजूद दूसरी स्त्रियाँ रूप, यौवन और कान्ति के गुणों में सदा जिसकी बराबरी न कर पावें तो उसे 'नर्तकी' समझना चाहिए।

अनुचारिका

जो सभी अवस्थाओं में राजा के साथ रहती हो तथा सेवा में लीन रहे तो उसे राजा की 'अनुचारिका' समझना चाहिए।

पारिचारिका

जो सेविका, आसन, छत्र लेने तथा चंवर डोलाने के कार्य के लिए नियुक्त की गई हो, जो पैर दबाने, सुगन्धित पदार्थ का लेपन, करने तथा शरीर को सजाने और अलंकार तथा पुष्पमाला आदि पहनाने का कार्य करती हो, तो उन्हें परिचारिका समझना चाहिए।

संचारिका

जो राजभवन के अनेक कक्षों में उपवन, मन्दिर, क्रीड़ाभवन और राजप्रसाद में आती जाती हो, समय की या प्रहर की सूचना के लिए जो घड़ियाल आदि बजाती हो या इसी प्रकार के अन्य कार्य करती हों तो उन्हें 'संचारिका' कहते हैं, नाट्य–वेत्ता इसमें किसी प्रकार व्यापार नहीं दिखलाते हैं।

प्रेषक–चारिका

जो स्त्री राजा द्वारा अपने गुप्त प्रणय–व्यापार के सन्देष तथा दौत्य आदि कार्य के लिए नियुक्त की जाती है, प्रातः इसी कार्य के लिए जो भेजी जाए, उसे दूती या 'प्रेषणचारिका' समझना चाहिए।

महत्तरिका

जो अन्तःपुर की संरक्षिका होती है, स्तुति और मंगल गीतों के गान में सहकार करती है और रनिवास में पुत्र जन्म जैसे मंगल–कार्यों को अभिनन्दित या संपन्न करती है उसे 'महत्तरिका' समझना चाहिए।

प्रतीहारी

जो स्त्री राजा के सन्धि, विग्रह आदि से सम्बद्ध अनेक उपस्थित कार्यों की सूचना देती हो उसे 'प्रतीहारी' कहते हैं।

कुमारिका

जिन्हें रति और प्रीति का कोई ज्ञान न हो, जो भ्रान्तिहीन तथा उत्तेजना रहित हो, उसे विनम्र और लज्जाशील हों, उन्हें 'कुमारिका' समझना चाहिए।

वृद्धा

जो स्त्रियाँ अतीत या पिछले राजा के व्यवहार और नीतियों की जानकारी रखती हो, पिछले राजाओं के सम्मान पाती रही हों तथा सभी के स्वभाव और कार्यों से परिचित (रहती) हों, उन्हें 'वृद्वा' समझना चाहिए।

आयुक्तिका

जिसके अधिकार में राज्य भण्डार तथा शस्त्र हो, जो फल, फूल, औषधि और राजा के लिए पकाये गये अन्न की परीक्षा या देखरेख करती हों, जो सुगन्धित–पदार्थ, अलंकार, पुष्पमाला एवं वस्त्र आदि को सम्हाल कर रखने वाली हो, इसके अतिरिक्त अन्य प्रयोजनों के लिए भी जिसकी नियुक्ति की जाए तो 'आयुक्तिका' कहलाती है।

साहित्यावश्लोकन

नाट्यशास्त्र– बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

भावप्रकाशन – शारदातनय, गायकवाड़ ओरियंटल सीरिज, बड़ौदा।

वर्तमान परिदृश्य

भरत ने नायिकाओं तथा नारियों के प्रभेदों का इतनी स्पष्टतः और विस्तृतता से वर्णन कर अपनी यथार्थवादी दृष्टि का परिचय दिया है, उनका विवरण

उनके जीवन की यथार्ववादी दृष्टि का परिचय दिया है, उनका विवरण उनके जीवन की बहुविधता का भी परिचय देता है, हालांकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नाट्यमंचन या अभिनय के वक्त इन प्रभेदों का इतनी गंभीरता से विचार नहीं किया जाता क्योंकि जीवन के सरलीकरण से इतनी विषुद्वता चल नहीं पाती लेकिन मूल बात तथा मूल तथ्यों को समझने, जानने, पहचानने में ये अहम् भूमिका रहते हैं। भारतीय परंपरा के अनुसार स्त्री के दो कार्य थे एक वह जो नाजुक, पवित्र, शोत, सुनने वाली, पति का भला करने वाली तथा दूसरों के लिए त्याग करने वाली के रूप में जाना जाता था। लेकिन वर्तमान में वही स्त्री शक्ति के रूप में जो नारी का क्रुर, सशक्त रूप है, वह विनाश और प्रतिशोध की देवी है तथा शक्ति के रूप में आज भी पूजा की जाती है।

स्रोत ग्रंथ

1. *नाट्यशास्त्र – चतुर्थ खंड, श्लोक 25, श्री बाबूलाल शुक्ल, पृ.सं. 453*
2. *नाट्यशास्त्र – चतुर्थ खंड, श्लोक 26,27,28 श्री बाबूलाल शुक्ल, पृ.सं. 454*
3. *नाट्यशास्त्र – तृतीय खंड, श्लोक 210, 211 श्री बाबूलाल शुक्ल, पृ.सं. 231*
4. *नाट्यशास्त्र – चतुर्थ खंड, श्लोक 32, 33,34 श्री बाबूलाल शुक्ल, पृ.सं. 455*